RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

जनवरी-2024 | वर्ष - 15 | अंक : 12 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख - रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

दिमाग ही आत्मा

दिमाग शरीर का सचालक है और इतना नाजुक है कि जिसका आपरेशन द्वारा अध्ययन नहीं किया जा सकता। दिमाग यदि 3 से 7 मिनट बंद रह जाये अथवा मर जाये तो फिर दोबारा जिन्दा नहीं होता यानि अपना काम नहीं करता है। इस विवेकशील दिमाग को ही मानव आत्मा समझता है। इसी को चेतना कहा गया है। आज के वैज्ञानिक मानव ने बिना दिमाग का आपरेशन किये नाना प्रकार के सूक्ष्म तरंगों के यंत्रों द्वारा,तरंगों की सहायता से दिमाग का बहुत अध्ययन किया है। दिमाग में कितने न्यूरोन होते हैं। किस प्रकार वह संस्कारों को ग्रहण करते हैं। कैसे वह पुरानी एकत्रित की हुई बातों को याद दिलाते हैं। दिमाग के जितने कार्य हैं उन सब की बाबत आज का मानव गम्भीर अध्ययन कर रहा है। कौन सी गतिविधि क्यों हो रही, यह जाना जा रहा है। आगामी 24 वर्षों में दिमाग उसी तरह खुली किताब होगी, जैसे हृदय की बाबत सभी कुछ आदमी जान गया।

पदार्थवादी और ईश्वरवादी दोनों एक दूसरे से विपरीत विचार है। ईश्वरवादी मानता है कि एक बार ईश्वर ने यह सृष्टि जैसे बना दी वैसी ही वह निरंतर चली आ रही है। वही घटनाएं बार-बार घटती हैं सृष्टि में स्वयं कुछ बनाने की शक्ति नहीं है। उसमें सब कुछ ईश्वर की शक्ति से होता है। क्योंकि पदार्थ पूर्ण रूप से जड़ है और ईश्वर चेतन है यह चेतन जैसे चाहता है, उस जड़ पदार्थ को उसी प्रकार से चलाता रहता है।

पदार्थ मानता है कि इस सृष्टि में जितना पदार्थ है उसका हर परमाणु चेतन और गतिशील है। पदार्थ की गति दबाव और तापमान आदि, अनेक परिस्थितियाँ ऐसी है, जो पदार्थ का रूप और गुण बदल देती हैं। पदार्थ निरन्तर बदलता रहता है और बदल कर नया रूप ग्रहण करता है। लोहे से पानी और हवा टकराती है अर्थात द्वन्द करती है। पानी के तत्व और हवा के तत्वों को लेकर लोहे में जंग लग जाता है अर्थात लोहे की आक्साइड बन जाती है। इसी प्रकार प्रकृति में हर जगह भौतिक द्वन्द चलता है। उस द्वन्द से नये पदार्थ का निर्माण होता है। फिर उसे नये पदार्थ का जन्म होता है। इसी को हम द्वन्दात्मक भौतिकवाद कहते हैं। पदार्थवादी पदार्थ में होने वाले परिवर्तन को, पदार्थ का गुण समझता है। और हर नयी बनने वाली वस्तु को अध्ययन करके उन नियमों की खोज करता है। जिनके द्वारा पदार्थ का वह नया रूप बना है। पदार्थवादी मानता है कि पूरी सृष्टि में बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, यह कारण की खोज करता है। इसी खोज को हम विज्ञान की खोज कहते हैं। पदार्थ में निरन्तर जो परिवर्तन होते हैं उनके नियम निश्चित हैं। अमुक परिवर्तन अमुक कारणों से होगा, वैज्ञानिक ज्ञान लेता है और अपनी प्रयोगशाला में उसी प्रकार की स्थिति पैदा करके पदार्थ को वही रूप दे देता है।

ईश्वरवादी ऐसे किसी नियम को नहीं मानता। वह तो सृष्टि के हर कार्य का कारण ईश्वर को मान कर चलता है। उसकी दृष्टि में यह जड़ संसार न अपना रूप बदल सकता है न कोई हरकत कर सकता है। ये जो असंख्य अनन्त परमाणु है, इनको कोई ईश्वर हर समय तोड़ता जोड़ता और गति देता रहता है। इसलिये पदार्थवादी और ईश्वरवादी में कभी कोई मेल नहीं हो सकता। वह व्यक्ति जो प्रत्येक कार्य का कारण ईश्वर को मानता है। उसके जानने के लिए सभी ज्ञान महत्वहीन है। जो वैज्ञानिक है, जो प्रत्येक कार्य का कारण जानना चाहता है, वह यह मानकर चलता है कि प्रत्येक परिवर्तन प्रत्येक घटना तथा प्रत्येक कार्य का कारण है तथा जो कुछ भी सृष्टि में होता है। वह पदार्थ के अपने गुण तथा कुछ नियमों द्वारा होता है, उन गुण और नियमों का पता लगाकर वैज्ञानिक प्रकृति के उस रहस्य को जान लेता है। उसे किसी ईश्वर को जानने की आवश्यकता नहीं होती।

जो लोग ईश्वर और विज्ञान का समझौता करवाना चाहते हैं वह निरे मूर्ख हैं। जो आदमी ईश्वरवादी होगा वह वैज्ञानिक नहीं हो सकता। और जो वैज्ञानिक होगा वह ईश्वरवादी नहीं हो सकता। परन्तु अज्ञानी लोग विज्ञान के द्वारा भौतिक सुख चाहते हैं। क्योंकि उन्हें विज्ञान द्वारा भौतिक सुख की प्राप्ति सब जगह दिखाई देती है और आत्मा और परमात्मा की बात इसलिए करता है क्योंकि वह उसे बचपन से सुनता आया है। परस्पर विरोधी विचारों का समन्वय करने का यह भद्दा प्रयास आदमी को भटका देता है। विज्ञान की प्राप्ति इसलिए नहीं होती क्योंकि वह प्रत्येक कार्य का कारण ईश्वर को समझता है। ईश्वर की प्राप्ति इसलिए नहीं होती क्योंकि ईश्वर होता ही नहीं। जो ईश्वर होता ही नहीं उसे प्राप्त कैसे किया जा सकता है।

साभार :
ईश्वर की खोज
पेज संख्या 20 से 22
चौ० महाराज सिंह भारती पूर्व सांसद

बाबा साहब द्वारा पूना पैक्ट का धिक्कार

(नागपुर)

3 अक्टूबर, 1982 को बेझन बाग मैदान, नागपुर में डी–एस4 की धिक्कार परिषद की श्रेष्ठ सफलता विरोध को देखते हुए, आशा से काफी अधिक थी। इसने बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर द्वारा सम्बोधित विशाल सभाओं के बाद दूसरा उदाहरण प्रस्तुत किया था। मंच का प्रबन्ध एवं समारोह का संचालन प्रशंसनीय था। 250 महिला बालंटियरों सहित लगभग एक हजार बालंटियरों ने अनुशासन का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

धिक्कार क्यों ?

डी–एस4 के अध्यक्ष मा. कांशीराम जी ने कहा कि आज हम नागपुर में धिक्कार सम्मेलन के लिए एकत्रित हुए जो कि 24 सितम्बर, 1982 को शुरू होकर 24 अक्टूबर 1982 को जालन्धर में समाप्त होने वाले धिक्कार कार्यक्रम श्रेणीक्रम में एक कड़ी है। यह एक माह का कार्यक्रम है। धिक्कार के बारे में बताते हुए उन्होंने आगे कहा कि बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने के बाद इससे होने वाले बुरे प्रभावों को खत्म करने के लिए, अपने जीवन भर प्रयत्न करते रहे लेकिन उनकी दुःखद मृत्यु के पश्चात उनके सहायकों ने इसके लिए कोई चिंता भी नहीं की, कुछ करने की बात तो बहुत दूर की बात थी। डी–एस4 द्वारा विभिन्न स्थानों पर धिक्कार सम्मेलन आयोजित करने के उद्देश्य सारे भारत में हमारे भाईयों को एक ही तरीके से सोचने के लिए संगठित करना है। हम सारे देश में संगठित होकर एक ही धारा पैदा करना चाहते हैं। क्योंकि जब उन्हें कुछ करना होगा तो उनको इसका पूरा ज्ञान होना चाहिए। उनको संगठित करने में यही विचार है कि सारे देश में उनके उचित सम्बन्ध होने चाहिए।

दलित–शोषित समाज संघर्ष समिति (डी–एस4) द्वारा सामाजिक आन्दोलन (Social Action) की शुरूआत 24 सितम्बर, 1982 से पेशवाओं (ब्राह्मणों) की राजधानी पूना से प्रारम्भ कर दिया गया है। इन ब्राह्मणों व अन्य तथाकथित सवर्णों ने दलितों का सारे भारतवर्ष में उत्पीड़न किया है, पूना से प्रारम्भ सामाजिक आन्दोलन (Social Action) न रूकने वाला (Non Stop) संघर्ष होगा। हम महसूस करते हैं कि अगर हम कुछ करना चाहते हैं तो कन्याकुमारी से कश्मीर तक और नागालैण्ड से गुजरात तक हमारे सामना करना चाहिए। इस सामाजिक कार्यवाही का उद्देश्य, मूलभूत समस्याओं के लिए लोगों को जगाना है। हम संघर्ष के लिए हमेशा मूलभूत समस्याओं को लेंगे। जहाँ तक पूना पैक्ट का सवाल है बाबा साहब स्वयं इस पैक्ट से खुश नहीं थे। 24 सितम्बर, 1932 को पैक्ट पर हस्ताक्षर करने के दूसरे दिन ही उन्होंने इसका धिक्कार किया था। इतना ही नहीं उन्होंने अपने लेखों में भी पैक्ट का प्रखण्डता से धिक्कार किया था। इसके समर्थन में उन्होंने अपनी तीन पुस्तकों–'कांग्रेस और गाँधी ने अछूतों के लिए क्या किया?' 'स्टेट्स एण्ड माइनोरिटीज एवं 'गाँधी और अछूतों की विमुक्ति' से कुछ उदाहरण दिये थे। महाराष्ट्र में आर.आर. भोले एवं उत्तरी भारत में मास्टर मानसिंह के नेतृत्व में पूना पैक्ट के खिलाफ संघर्ष प्रारम्भ करने के लिए बाबा साहब ने अपने अनुयायियों को 1946 में आदेश दिया था।

मान्यवर कांशीराम जी ने आगे बताया कि इस अवसर पर मैंने 'चमचा युग' नामक एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में मैंने पूना पैक्ट से नुकसानों पर बाबा साहब के विचारों को एवं बाबा साहब द्वारा किये गये धिक्कार के उदाहरण दिये हैं। मैंने आपको यह सब क्यों बताया? क्योंकि बहुत से हमारे भाई सोचते होंगे कि जब पूना पैक्ट पर बाबा साहब ने हस्ताक्षर किये थे तो हमको इसका धिक्कार क्यों करना चाहिए? लेकिन हम यह भूल गये कि यद्यपि बाबा साहब ने पैक्ट पर हस्ताक्षर किये थे फिर भी उन्होंने 1932 से लेकर 1947 तक 15 वर्षों तक न केवल अपने भाषणों में बल्कि किताबों और लेखों में इसका धिक्कार किया था। जब बाबा साहब ने स्वयं उसका धिक्कार किया था तो हमको उसका धिक्कार क्यों नहीं करना चाहिए? और बाबा साहब के सहयोगियों को क्यों नहीं करना चाहिए।

1947 के बाद

बाबा साहब ने 1942 तक इसका धिक्कार किया था लेकिन जब उनको यह महसूस हुआ कि इसके बाद धिक्कार का कोई उपयोग नहीं है, तब उन्होंने इसके रास्ते निकालने के प्रयत्न किये क्योंकि अगर हम धिक्कार करके चुप रहे तो इसका कोई प्रभाव या लाभ नहीं है। हमें भी इसके रास्ते निकालने चाहिए और बाबा साहब ने क्या कहा है वह हमेशा अपने दिमाग में रखना चाहिए। 1947 से 1956 तक, पूरे 10 वर्षों तक अपने लोगों के लिए रास्ते निकालने के लिए लड़ाई लड़ते रहे। बड़ी खुशी है कि उन्होंने हमें स्पष्ट दिशा निर्देश दिये हैं। हम अपने को इसमें नहीं उलझायेंगे कि क्या बाबा साहब के सहयोगियों (Lieutenants) ने उनके बताये रास्ते का पालन किया है? हमें बड़ा दुख है कि इन लोगों ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया है। लेकिन हम इसके लिए किसी पर आरोप नहीं लगा रहे हैं। हम महसूस करते हैं कि यह हमारी जिम्मेदारी है। अगर हम इसको वास्तव में अपनी जिम्मेदारी महसूस करते है तो हमको रास्ते खोजने निकालने की दिशा में कुछ करना है हमें सोचकर योजना बनानी है और इस दिशा में कार्यवाही की शुरूआत करनी है।

धिक्कार व्यक्तियों का नहीं बल्कि नीतियों का

आगे अपनी बात को बताते हुए मा. कांशीराम जी ने कहा कि जब हम पूना पैक्ट का धिक्कार करते हैं तो इसका अर्थ गांधी जी या किसी अन्य व्यक्ति का धिक्कार नहीं है। हम गांधी जी का आदर तो करते ही हैं जितना कि उनका हमें करना चाहिए। बिना मतलब के हम किसी को गाली नहीं देना चाहते और बाद विवाद में भी उलझना नहीं चाहते। हम समझाने–बुझाने में विश्वास करते हैं हमें अपने भाईयों की सहायता से रास्ते पाने की उम्मीद है। क्योंकि रास्ते निकालना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है खासतौर से जबकि बाबा साहब की ऐसी इच्छा थी।

शिक्षित व्यक्तियों का योगदान

हमारे पढ़े–लिखे लोगों की संख्या काफी अधिक है यहाँ तक कि नौकरशाही में भी हमारे बहुत से लोग हैं। जब ये लोग सारे देश के लिए प्लान बना सकते हैं, प्रशासन संभाल सकते हैं, तो अपने लोगों के लिए योजना क्यों नहीं बना सकते? मैं यह महसूस करता हूँ कि अगर हमारी इच्छा वास्तविक है तो हम निश्चय ही सही रास्ते निकाल सकते हैं। आगे बढ़ने से पहले बाबा साहब के कथन को बताना चाहूगा, 1942 में अपने लेख में पैसीफिक रिलेशन कांफ्रेंस में बाबा साहब ने कहा, 'हिन्दूओं के विचार से संयुक्त मतदान (Joint Electorate) प्रचलित प्रशंसा का प्रयोग करना है। वास्तव में यह एक दूषित प्रचलन है जिससे हिन्दुओं को अधिकार प्राप्त हुआ है कि वे एक अछूत को नाममात्र के लिए अछूतों का प्रतिनिधि चुनते हैं लेकिन वास्तव में वह हिन्दुओं का एक औजार (Tools) ही होता है।' 1947 में संविधान सभा के लिए तैयार किये गये अपने स्मृतिपत्र में उन्होंने कहा, 'पूना पैक्ट ने अनूसुचित जातियों के मताधिकार को पूर्णतः निरर्थक बना दिया है। यहाँ तक कि प्रारम्भिक चुनाव में जिस उम्मीदवार को अस्वीकार कर दिया जाता था– जो कि उनकी आकांक्षाओं का सच्चा संकेत था, वह अंतिम निर्वाचन में सवर्ण हिन्दुओं के मतों से जीत कर आ जाता था।

उपायों की तलाश

जब बाबा साहब ने महसूस किया कि पूना पैक्ट की व्यवस्था के अन्तर्गत अनुसूचित जातियों के सच्चे प्रतिनिधियों को हम चुनकर नहीं भेज सकते तो उन्होंने 1947 में अनुसूचित जातियों के लिए पृथक मतदान की मांग भी की। यद्यपि उन्होंने अपनी सारी शक्ति से कोशिश की लेकिन जैसी उनकी इच्छा थी वैसा प्राप्त नहीं कर सके। जब तक अंग्रेज भारत में रहे बाबा साहब सोचते थे कि वे हमें न्याय देंगे, लेकिन जब वे देश को छोड़ कर चले गये तब इस मांग का कोई उपयोग नहीं था क्योंकि अब सारी शक्तियाँ (राजनैतिक, आर्थिक, सामन्तवादी एवं सांस्कृतिक शक्तियाँ) मुठ्ठी भर ब्राह्मण, बनियों एवं बड़े जमींदारों के हाथों में आ गयी थी जो कि हमारा पिछले हजारो वर्षों से शोषण करते चले आ रहे थे। ऐसे लोगों से न्याय की आशा करना ही व्यर्थ था तब इसलिए वे उपाय खोजने की तरफ मुड़े थे।

1947 के बाद उन्होंने प्रथम बार 1948 में और उसके बाद 1952 में अनुसूचित जातियों व पिछड़े वर्गो की एकता के प्रयत्न किये लेकिन जब वे इन प्रयत्नों में अधिक सफल नहीं हो सके तो अन्तिम रूप से उन्होंने भारतीय रिपब्लिकन पार्टी बनाने की योजना बनाई। उनके द्वारा किये गये ये सारे प्रयत्न दलित एवं शोषित लोगों के आधार को विस्तृत करने के लिए थे ताकि ये लोग अपने स्वयं के बहुमत के आधार पर भारत में शासन कर सकें।

दुर्भाग्यवश बाबा साहब की दुखद मृत्यु के बाद उनके सहयोगियों (Lieutenants) ने कुछ नहीं किया। शायद उन्होंने अपनी तरफ से उत्तम प्रयत्न किये हों लेकिन वे उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सके जहाँ कि बाबा साहब हमें देखना चाहते थे। लेकिन हम उनको दोष नहीं देंगे। अगर हम वास्तव में इसको अपना कर्तव्य समझते हैं तो हमें इसके लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए। शुरू में मैंने व मेरे सभी साथियों ने रिपब्लिकन पार्टी के नेताओं को सभी तरह का सहयोग दिया था, लेकिन जब वे कोई परिणाम नहीं दिखा सके तो अब यह जिम्मेदारी हमें अपने ऊपर लेनी है।

डी–एस4 का संकल्प

मान्यवर कांशीराम ने घोषणा की कि अब आगे से हम कभी भी बाबा साहब के देहावसान के बाद उनके आन्दोलन की असफलता के लिए, किसी को भी दोष नहीं देंगे। अब यह जिम्मेदारी स्वयं लेते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि समयबद्ध कार्यक्रम के अनुसार हम वैसा ही कर दिखायेंगे जैसा कि बाबा साहब चाहते थे। इस दिशा में पहले कदम के रूप में शीघ्र ही अपनी संसद 'जन–संसद' (People's Parliament) के नाम से शुरू करने जा रहे हैं और यह कार्यक्रम तब–तक चलेगा जब–तक कि हम राष्ट्रीय संसद पर कब्जा नहीं कर लेते। दूसरे हम एक वर्ष के अन्दर यानी 6 सितम्बर 1983 तक दलित शोषित समाज को एक राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त पार्टी देंगे। और तीन वर्षों में ऐसी स्थिति पैदा कर देंगे कि कोई भी सरकार हमारी सहमति के वगैर नहीं चल सकेगी।

मा. कांशीराम जी ने अन्त में कहा कि इस अवसर पर मैं यह भी वायदा करता हूँ कि अगर हमारे नेता समाज के लिए इससे अच्छा कर सकते हैं तो हम स्वागत करते हैं। और उनको हम अपना पूर्ण सहयोग व समर्थन देंगे हम उनके रास्ते में आड़े नहीं आयेंगे लेकिन मैं यह महसूस करता हूँ कि हमारे दुश्मन के फायदे में रहेगा कि हम आपस में बंटे रहे लेकिन ये हमारे फायदे में नहीं हैं। इसलिए अगर वे लोग समयबद्ध कार्यक्रम के अनुसार उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकते तो उनको हमारे रास्ते में आड़े नहीं आना चाहिए। अगर वे टांग खींचने से नहीं मानते तो मैं उम्मीद करता हूँ कि हम उद्देश्यों को निर्दिष्ट समय में प्राप्त कर लेंगे।

सम्मेलन की अध्यक्षता मा. डी.के. खापर्डे ने की, नागपुर जागृति–जत्था के प्रसिद्ध गायक विजय वाकपैजन ने गीतों के माध्यम से संघर्ष की तैयारी करने का आह्वान किया। सभा को मधु ऊके, कु. चन्दा काम्बले (नागपुर), डॉ. माल्टे, सुखदेव तिड़के (अमरावती), नलिनी लड़के (विदर्भ), एकनाथ सालवे (पूर्व विधायक चन्द्रपुर), कु. मायावती (दिल्ली), एस.आर.बौद्ध (हरियाणा) तथा अनन्त राव फुले (जोतीराव फुले के प्रपौत्र) ने सम्बोधित किया तथा राम कोडारे ने धन्यवाद प्रस्तुत किया।

(बहुजन संगठक, वर्ष 3, अंक 20, 1 नवम्बर, 1982)

साभार :

मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–2, पेज संख्या 77 से 82 तक संकलन/सम्पादक ए. आर. अकेला

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

बौद्ध काल में शिल्प संबंधी जातियां एवं सामाजिक न्याय

हिंदू (वेदकाल में आदिम जातियां पेशागत हुई और बुद्धकाल में पेशागत जातियां जन्मजात–जन्म आधारित हो गईं। इस समय तक इनके पेशे खानदानी और आनुवंशिक हो गए। अगर बुद्धकाल में पेशे बदले जाते तो जातियां नहीं बनतीं। आज भी आदिमकाल की ही तरह से शिल्पी शिल्पी ही रहते और शिल्पी समूह रहते। जिन दासों और पराजितों (गुलामों) से घृणितम पेशे कराए गए। उन्हें ही घृणितम जाति बना दिया गया। यह दोहरी सामाजिक मार थी। युग बदला, राजा बदले, बुद्ध जैसे धर्मप्रचारक बदले पर शूद्रों–दासों के पेशे नहीं बदले बल्कि उनके पेशे को आनुवंशिक बना दिया गया। पुरोहित के बेटे को वही पेशा दिया गया जो बाप करता था, शूद्र के बेटे को वही पेशा दिया गया जो उसका बाप करता था। चमार के बेटे को कभी शिक्षा नहीं दी गई, वह जाहिल बना रहा और चमड़े का कार्य करता रहा, वह शिक्षक–आचार्य (उपाध्याय अथवा ब्राह्मण) नहीं बन सका। यही परंपरा बुद्धकाल में भी रही। शिक्षा हिंदू काल में बंद थी तो बुद्धकाल में भी शिक्षित होने से रोका गया। कुल मिलाकर बुद्धकाल बुद्ध काल में भी शूद्र–चांडाल एवं दस्यु जातियों के साथ अन्याय ही हुआ है। हो सकता है किसी काल में किसी शूद्र–दास ने किसी ब्राह्मणी के साथ संसर्ग किया हो, किसी क्षत्रीय अथवा किसी राजा की बहन–बेटी के साथ संभोग किया हो, तो उसकी सजा उस पूरे वर्ग को पीढ़ी दर पीढ़ी क्यों?

राइस डेविड्स ध्रुवनाथ आर.सी.मजूमदार तथा डॉ. कृष्णाकुमारी श्रीवास्तव ने इस पर गहन विचार किया है। डॉ. मदन मोहन सिंह तथा देश–विदेश के लाखों लेखकों ने शिल्पी संध्यों का उल्लेख किया है। विभिन्न जातकों में इन्हें सेणियो, (श्रेणियः) तथा पूग कहा है। गौतमबुद्ध ने शिल्प को उत्तम मंगल कहा है। जातक काल में अनेक प्रकार की शिल्पकारियां थीं, अतः शिल्पकार भी थे और यही शिल्पी शिल्पगत हो गए।

1. चर्मकार– ये चमड़े का काम करते थे, मरे पशुओं जैसे, गाय, भैंस, बैल आदि की खाल भी उतारते थे तथा मांस खाते थे और नसें खींचकर सूप, डलिया, धौंकनी, पट्टे, हस्तिपाद, छाते और जूते बनाते थे। पर नीच कहलाते थे।

2. अंगारिका – ये कोयले बनाने का काम करते थे। नगर, ग्राम तथा राजभवनों में कोयले का प्रयोग होता था। यह अनिवार्य शिल्प था।

3. अरामिक – ये माली होते थे। उद्यानों की देखभाल, राजभवनों में शादी–पार्टी आदि में अरामिक के फूल व माला के बिना काम न चलता था।

4. अजपाल–बकरी पालन करने वाले होते थे। गोस्त की आपूर्ति अजपाल ही करते थे। राजघरानों, सैनिकों को यह मांस उपलब्ध कराते थे।

5. अश्वागोषको– यह घुड़चरवाहा होता था। राजपरिवारों तथा सैनिकों के घोड़ों को चराना, पानी पिलाना व घिस्सा मालिश का काम करता था।

6. अस्सारोहा– अश्वारोही होते थे। इन्हें गुफाओं, कंदराओं का ज्ञान होता था। ये कभी–7 कभी गुप्तचरी का काम भी किया करते थे।

7. अहिगुंडिकों– इन्हें सपेरा कहते थे। सांप तथा बंदर का खेल–तमाशा दिखाते तथा इसी से प्राप्त अन्न से जीविका चलाते थे।

8. आचारियस– आचार्य। ये तत्कालीन शिक्षक होते थे जो या तो गुरूकुल में द्विजों को शिक्षित करते थे या राजपरिवारों में द्विजों को। शूद्र को नहीं।

9. आलारिका–रसोइया। राजघरों तथा राजभवन में काम करता था।

10. उद्यानपाल– ये विशिष्ट उद्यानपालक होते थे। जैसे विशेषज्ञ।

11. उसुकारो– बाण बनाने वाले श्रमिक।

12. रलकपाल – भेड़ चराने व पालने वाले।

13. कम्मार – कर्मार अर्थात लोहार होते थे। लोहे का काम करते थे, ये राजाओं के यहां भी काम जैसे भाले–बरछे का काम करते थे।

14. कप्पको – नाई–हजामत बनाने वाले।

15. कट्टहारक– लकड़हारे। यह ईंधन की आपूर्ति करने में योग देता था। राजभवनों तथा सैन्य ठिकानों तक लकड़ियां पहुंचाने का काम करता था।

16. कुम्भकार– कुम्हार–मिट्टी के खिलौने और बरतन बनाने वाले।

17. कस्सक – कृषक जो खेती करते थे।

18. केवट – मछुआरे–नदी, तालाब, झील झरने आदि से मछली आखेट करने वाले।

19. खग्गहत्सा – खंगधारी।

20. खेत्तपाल –खेतों की रखवाली करने वाले होते थे। पशु अथवा चारों से खेती की रक्षा करते थे। 21. गायका– गाना गाकर महफिलों में गीत गाकर चारणों जैसा काम करने वाले।

22. गोपालक – ये गाय पालते थे। इन्हें ग्वाला भी कहते थे।

23. गणिकाएं – इज्जत बेचकर उदरपूर्ति करने वाली स्त्रियां। बौद्धकाल में वेश्याएं मान्यता प्राप्त होती थी। वेश्यावृत्ति राजा खुद कराते थे। यह उनका धंधा था।

24. गंधब्ब – गंधर्व–शराब बनाने वाले।

25. गांधिक – सुगंधित द्रव्यों–इत्र–फुलेल, तेल आदि का व्यापारकर्ता। आजकल इन्हें गंधी कहा जाता है। किंतु कार्य वही होता है।

26. घटिकार–मिट्टी, पीतल, टीन आदि के घड़े बनाने वाले।

27. घातक– जल्लाद ये कानूनीजामा देते थे।

28. चित्तकार–ये चित्रकारी का कार्य करते थे। राजभवनों, घरानों तथा नगरों में दीवार, कर्पट या अन्य चित्रकारी करते थे।

29. कुम्भथूनियो – घड़े बजाकर अपनी जीविका चलाने वाले।

30. तृणहारका – घसियारे–घास बेचकर जीविका चलाने वाले।

31. तेलय– तेली–बैल कोल्हू द्वारा तेल पेरने–बनाने वाले।

32. तक्किकाति – तर्कग्राही–दलीलबाज होत थे।

33. तिकिच्छिक– चिकित्सक–वैद्य–चीर– फाड़ वाले डॉक्टर।

34. तंतवाय – कपड़ा बुनने वाले जुलाहे। इनका यह मुख्य पेशा था।

35. दंतकार – हाथी दांत के साम्मान–चाकूबेंट, चूड़ी आदि निर्माण करना।

36. दुस्सिके – वस्त्र बेचने वाले।

37. दंतकत्थक – मुखोदक और दातून लाने–बेचने वाली।

38. धाती– धाय–बच्चों की देखभाल कर जीविका चलाने वाली।

39. धुनग्गह – धनुषधारी–तीर–धनुष की कालाबाजी करने वाले।

40. निषाद– पक्षियों आदि को पकड़ने वाले लोग।

41. नेमित्तक – ज्योतिषी–अपनी जीविका इसी से चलाते थे।

42. नाविक – मल्लाह–नाव चलाकर जीविका चलाने वाले।

43. नट्टक – नर्तक–नृत्य आदि करके जीविका चलाने वाले।

44. नट–नट अर्थात कलाबाजी कर जीविका चलाने वाले।

45. नाटकित्थियों – नौटंकी आदि में कलाकर

47. नटकिनियो – नृत्यकार।

48. निय्यामको – नियामक–नाव निर्देशक करने वाले लोग।

49. नलकार– बेंत और बांस से टोकरी आदि बनाने वाले लोग।

50. परिचारिका – नगर के खुशहाल घरों में सेवा–घरेलू काम करने वाली।

51. पशुपालक– पशुपालन कर अपनी जीविका चलाने वाले।

52. पोत्थकार – पोथी–पत्र आदि से कार्य जीविका चलाने वाले पुरोहित।

53. पव्वतकूट – पत्थर तराशने वाले जौहरी।

54. पण्यियहारक –पालकी ढोने वाले कहार।

55. पण्णिक – तरकारी (सब्जी) बेचकर जीविका चलाने वाले।

56. पाथेयहारक – भोजन पहुंचाकर आजीविका चलाने वाले।

57. पाणिस्सर – ताली बजा–बजाकर गाने वाले लोग।

58. बहुभंडो – बहुभांडिक लोग।

59. भेरी वादक – भेरी बजाकर जीविका चलाने वाले लोग।

60. भत्तिको – भिस्ती–पानी भर कर जीविका चलाने वाले लोग।

61. भत्तकारको –रसोइया–ये लोगों के घरों में भोजन पकाते थे।

62. मणिकार –मणियों से आभूषण बनाने वाले।

63. मल्ल – पहलवानी–कुश्ती के द्वारा आजीविका चलाने वाले।

64. मालाकार– माली जो फूलों से पहलवानी करने वाले।

65. मुट्ठिका –मुष्टि आदि से पहलवानी करने वाले।

66. मायाकार– जादू के द्वारा जीविका चलाने वाले लोग।

67. मणिक – कूजड़े–तरकारी बेचने वाले।

68. मागदेशक – मार्गदर्शक – जैसे आज ट्रैफिक पुलिस वाले होते हैं।

69. महाचोरो – चोर समूह–नगरों, ग्रामों आदि में चोरी करने वाले।

70. रजक – धोबी जो कपड़े धोकर अपनी जीविका चलाते थे।

71. रथकार – रथों का निर्माण करने वाले, कुर्सी, सिंहासन आदि बनाने वाले।

72. लुब्धक – पशु–पक्षियों का शिकार कर मांस बेचने वाले शिकारी होते थे।

73. लंगटन – बाजीगर नट की कला दिखाते थे।

74. लंघिका – लंबी, ऊंची कूद कूदने वाले जीविकोपार्जी।

75. लोणकार– नमक बनाने व शोध कर जीविका चलाने वाले श्रमिक।

76. वम्मिको – ढाल–तलवारधारी लोग।

77. वेतालिक – बैतालिक, दरबान अर्थात द्वारपाल होते थे।

78. वेज्ज – वैद्य–नगर ग्रामों में रोगी देखने वाले।

79.वणिज –व्यापार करने वाले लोग।

80. वण्णदासियां – वेश्याएं–यौनकर्मी।

81. वनकम्मिका – वनों में काम करने वाले लोग।

82. विज्जधरो – छोटे–मोटे जाजूगर/ग्रामों मुहल्लों के जादूगर

83. वेसीय – क्षेत्रीय वेश्याएं–ग्राम वेशियाएं।

84. वड्ढकि – बढ़ई–लकड़ी के काम कर जीविकोपार्जन करने वाले।

85. वनचर– वनों में रहने वाले व वनों से जीविका चलाने वाले।

86. सूद – भोजन लाने वाले व बदले में भोजन पाने वाले।

87. शरीरदाहापि – श्मशान में मुर्दा जलाने वाले श्मशानघाटी।

88. साकुणिक – चिड़ीमार–चिड़ियों को मार कर जीविका चलाने वाले।

89. सोट्ठी – बड़े–महाधनवान व्यापार सेठ

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

90. संघटिक – गाड़ीवान–दो गाड़ियां चलाकर अपनी जीविका चलाते थे।

91. शंखधमक – शंख बजाकर अपनी जीविका चलाने वाले।

92. सारथी – रथ चलाकर जीविकोपार्जन करने वाले।

93. सत्यावाह –पांच–पांच सौ गाड़ियों से व्यापार करने वाले धन्ना सेठ

94. सोकझायिका – विदूषिका–ग्राम नगरों में हंसाने वाली कलाकार।

95. सुवण्णकार – सुनार–स्वर्णाभूषण बनाने वाले।

96. हेरिंकस – सर्राफ–बड़े आभूषण निर्माण करने वाले।

संदर्भ एवं टिप्पणियां

1. राइस डेविड्स – बुधिष्ट इंडिया–पृष्ठ–90
2. डॉ. धुवनाथ – बौद्ध भारत–पृष्ठ – 63/64
प्राचीन भारतीय राजनैतिक संस्थाएं
डॉ. श्रीकांत पाठक–प्राचीन भारतीय संस्थाएं
डॉ. थांडुरंग वामन काणे–धर्मशास्त्र का इतिहास
3. आर.सी. मजूमदार–प्राचीन भारत में संगठित जीवन पृष्ठ–18
डॉ. धर्मवीर–थेरीगाथा की स्त्रियां और डॉ. अंबेडकर
धर्मानंद कोशंबी–प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति
राहुल सांकृत्यापन–मानव समाज
4. डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव–पालि जातक एक सांस्कृतिक अध्ययन पृष्ठ–276, सुलभ प्रकाशन, 17 अशोक मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
5. डॉ. मदन मोहन सिंह–बौद्ध कालीन समाज एवं संस्थाएं
मेहर सिंह पूषर्ण–मूलवंशी और बौद्ध धर्म
आर डी. प्रसाद–भूमिका–मूलवंशी और बौद्ध धर्म
6. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ–314
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–2 पृष्ठ–12
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–1 पृष्ठ – 453
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–2 पृष्ठ– 175
7. महामंगल सुत्त, चतुर्थगाथा–दिव्यावदान– 359/20
डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव–पालिजातक एक अध्ययन पृष्ठ–277
8. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–4 पृष्ठ–172
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–5 पृष्ठ–45
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–4 पृष्ठ–373
जातक अनुवाद रोमन हिंदी जिल्द–5 पृष्ठ–134
9. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ–121
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–3 पृष्ठ–129
जातक रोमन जिल्द–5 पृष्ठ–420
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–1 पृष्ठ–203/204
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–3 पृष्ठ–293 /5 / 505
10. जातक अनुवाद रोम जिल्द–1 पृष्ठ–105 हिं.जि. 1 पृष्ठ–183
11. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–6 पृष्ठ–276
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–6 पृष्ठ–315 हिं.जि. 6/50
12. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–4 पृष्ठ–364 हिं.जि. 4/573
13. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–2 पृष्ठ–328 हिं.जि. 3 पृष्ठ–54
14. जातक अनुवाद रोम जिल्द–3 पृष्ठ–409 हिं.जि. 4 पृ. 69
15. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ 480 हिं 2–120
16. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–2 पृष्ठ–246 हिं. 2–453
17. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ–127
18. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ 312
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–1 पृष्ठ–451
19. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ 430
जातक अनुवाद रोमन जिल्द–6 पृष्ठ 277
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–2 पृष्ठ–56
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–6 पृष्ठ–330
20. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–4 पृष्ठ–353 हिं. जि. 4 पृष्ठ 560
डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव पालिजातक–एक अध्ययन पृष्ठ–284
21. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ 384 हिं.जि. 1 पृष्ठ–544
22. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–6 पृष्ठ 276 हिं. जि. 6–315
23. जातक अनुवाद रोम जिल्द–2 पृष्ठ 285
जातक अनुवाद रोम जिल्द–3 पृष्ठ–32
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द –2 पृष्ठ – 104
जातक अनुवाद हिंदी जिल्द–3 पृष्ठ–370
24. जातक अनुवाद रोमन जिल्द–1 पृष्ठ–202/548
डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव–पालिजातक, पृष्ठ–285

साभार

शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास
पृष्ठ सं० 321 से 327 तक
एस.के. पंजम

इस समाज का कल्याण एक–न–एक दिन अवश्य होकर रहेगा

(छिन्द)

(हमारे प्रतिनिधि द्वारा) 16–17 जनवरी 1981

अखिल भारतीय रामनामी महासभा के 72वें वार्षिक सम्मेलन द्वारा आयोजित छिन्द में विशाल मेले के अवसर पर एक जन–सभा हुई जिसकी अध्यक्षता रामनामी समाज के अध्यक्ष आदरणीय बोधाराम जी ने की।

विशाल जन–सभा को सम्बोधित करते हुए बामसेफ के अध्यक्ष मा. कांशीराम जी ने कहा कि भारत के इस संभोग में जिसे छत्तीसगढ़ कहा जाता है, इस क्षेत्र के संगठनों ने जो मुझे प्रथम बार आने का मौका दिया है। उसके लिए मैं उन्हें बार–बार धन्यवाद देता हूँ। मैं समझता हूँ कि भारत के कोने–कोने में जाने से मुझे जो कुछ सीखने को मिलता है उससे बहुत ज्यादा इन तीन दिनों में ही आपके यहाँ से सीख सकूँगा, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि मेरे साथ बहुत सी अन्य जगहों से बामसेफ के सक्रिय कार्यकर्ता आए हैं।

उन्होंने आगे बताया कि जिस प्रकार इस क्षेत्र में रामनामी, सतनामी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और कबीरपंथी लोग आज सोच रहे हैं, ठीक उसी प्रकार भारत के हर कोने में दलित और शोषित लोग भिन्न–भिन्न धर्म और पंथ को मानते हुए भी इसी दिशा मे सोच रहे हैं। बामसेफ का अनुभव है कि जब सभी लोग भारत के हर कोने से एक ही दिशा में सोचेंगे तो इस समाज का कल्याण एक–न–एक दिन अवश्य होकर रहेगा।

बामसेफ क्या कर रही है और क्या करेगी यह प्रदर्शनी उसका ही एक महत्वपूर्ण अंग है, प्रदर्शनी जन–जागृति का सबसे बड़ा माध्यम होता है, इसे आप लोग भी अनुभव कर रहे होंगे।

मैं देख रहा हूँ कि इस प्रदर्शनी के दो अंग या पहलू हैं। एक और हमारे पूर्वजों द्वारा हमें आज की हालत में पहुँचाने का लेखा–जोखा है कि उन्होंने कितनी कठिनाइयाँ, अत्याचार और अपमान सहकर हमारे लिए आदर्श प्रस्तुत किए, हमारा मार्गदर्शन किया, उसकी पूरी झांकी आपके सामने है। यह प्रदर्शनी आपको यह भी दर्शाती है कि विभिन्न क्षेत्रो के पथ–प्रदर्शक और प्रवर्तकों ने भारत के हर कोने में एक–एक आंदोलन या स्वाभिमान की लड़ाई कायम की है, जैसे साठ–सत्तर वर्ष पहले पंजाब में आदिधर्मी, बंगाल में नमोशूद्र, तमिलनाडू में पेरियार रामासामी द्वारा प्रवर्तित आंदोलन, केरला में नारायण गुरू यथा महाराष्ट्र में महात्मा ज्योतिराव फुले और उनके बाद डॉ. अम्बेडकर आदि का आंदोलन हुआ। इन्हीं सब संघर्ष की कहानी को इकट्ठा करने का बामसेफ का छोट–सा प्रयास है जो आप लोगो के सामने हैं।

प्रदर्शनी का दूसरा पहलू है कि आज 33 वर्षो की आजादी के बाद भी सरकार की ओर से कोई विशेष कार्य हम लोगों के लिए नहीं हुआ है, दूसरे सवर्णों के द्वारा अत्याचार भी जारी है, गरीब और पीड़ितों की शिकायत न थाने में सुनी जाती है और न अदालतों में, अत्याचार के एक–से–एक हृदयविदारक दृश्य आपके सामने प्रस्तुत किए गए हैं। कहीं हमारी मां–बहनों को नंगा किया जाता है तो कहीं किसी की आंखें निकाल ली जाती हैं, कहीं हमारे समाज के मजदूरों को मजदूरी मांगने के बदले जिंदा जलाया जा रहा है। ये अत्याचार हमारे समाज के ऊपर ही नहीं हो रहे बल्कि इससे इसाई, मुसलमान और जन–जाति के लोग भी अछूत नहीं हैं उनकी भी वही दशा है जो हमारी है, ऐसे सभी हृदयविदारक समाचार दिन प्रतिदिन समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं के माध्यम से पढ़ते हैं।

अपने भाषण के अन्त में उन्होंने कहा कि इन अत्याचारों के चले आ रहे अनवरत क्रम को रोकने के लिए ही बामसेफ अपने कार्यकर्ताओं के साथ सजग हैं उन्होंने कहा कि इस वर्ष के अन्त तक आपको समाज का नंगा फिरना व्यापक रूप से बामसेफ प्रदर्शनी के माध्यम से देखने को मिलेगा। आप सबने मेरी बातों को बड़ी शान्ति से सुना इसके लिए धन्यवाद।

सभा को मा. अवधराम भारद्वाज, मा. दयावंतदास जी तथा गुरू बोधाराम जी ने भी संबोधित किया।

(बहुजन संगठक, वर्ष 1, अंक 36, 9 फरवरी 1981)

साभार :
मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण
पेज संख्या 88 से 90
ए. आर. अकेला

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

कुशल बनो। उत्पादन करो।। अधिकारों के लिए संघर्ष को तैयार रहो।।।

मानवता को वापस भुगतान करें
Pay back to humanity
कुछ भी संभव है
अगर आपको खुद पर विश्वास है

रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारी महासंघ ट्रस्ट

Defence And Multiple Civilian Employee Federation Trust

पंजीयन सं० 34 दिनांक 18/10/2023

भारतीय न्यास अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत

कार्यक्षेत्र समस्त भारत

–: पंजीकृत कार्यालय –

ग्राम व पोस्ट – रिवई (सुनैचा)
थाना – कबरई, जिला महोबा (उ० प्र०)
मो०: **7839007418**
E-mail : damceftrust@gmail.com
Website : www.dbindia.org.in

–: प्रदेश कार्यालय उत्तर प्रदेश :–

म० न० 50B, तुलसी नगर
नियर पी० ए० सी० गेट
श्याम नगर, कानपुर (उ० प्र०)
मो०: **9506623779**

प्रदेश प्रभारी

बीरबल वर्मा

मो०: **9936429765**

लक्ष्य – रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों की समस्याओं से भारत सरकार एवं सभी सम्बन्धित राज्य सरकारों विभागों को अवगत कराना और उनके निराकरण हेतु कानून बनवाने आदि की मांग करना।
रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों के सहयोग से वंचित, पीड़ित, शोषित प्राणियों के कल्याण हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु तत्पर रहना।
शिक्षा – निःशुल्क शिक्षा हेतु भारत के प्रत्येक जिले में विभिन्न स्तर की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और संचालन करना।
स्वास्थ्य – चिकित्सा सेवाएं निःशुल्क प्रदान करवाना और चिकित्सालयों की स्थापना करना।
सामाजिक सुरक्षा – व्यक्तियों के संकट के समय, जन्म, मृत्यु या विवाह में होने वाले अतिरिक्त व्यय की पूर्ति के लिए लाभ प्रदान करना है।
रक्षा – रक्षा में लगे कर्मचारियों व उनके परिवार से है।
और – सभी
विभिन्न नागरिक कर्मचारी – संगठित और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत कार्मकारों से हैं।
(सशस्त्र बलों में कार्यरत कर्मचारियों को छोड़कर)
महासंघ – भारत के नागरिकों का संगठन से है।
ट्रस्ट – विश्वास/भरोसा है।

उस संगठन को दान दें
जिस पर आप विश्वास करते हैं
Make Donations to
an Organization You Believe In

–: उद्देश्य :–

- लक्ष्य की पूर्ति हेतु पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं की नियुक्त करना आदि।
- संचालित शिक्षण/प्रशिक्षण संस्थाओं में गरीब बच्चों को शिक्षण हेतु प्रवेश दिलाना और उनका खर्च वाहन करना।
- रोजगार के सृजन के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना/संचालन करना आदि।
- भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डा० अम्बेडकर के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करने वाले नागरिकों को ''डा० अम्बेडकर विचार प्रचार रत्न'' से सम्मानित किया जाना।
- प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करना आदि।

अतः आप सभी भारत के नागरिकों से अपील है कि तन, मन, से सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

निवेदक –

सियाराम

राष्ट्रीय संयोजक/न्यासी, **मो०: 9454923394**

अनिल कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम)
मो०: 8593630338, 07897757223
श्रीमती उमेश्वरी देवी
राष्ट्रीय संयोजक (मुद्रण एवं संचार)
मो०: 9005204074, 8756157631
मनोज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (बेसिक शिक्षा विभाग)
मो०: 8787010365
पंकज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (माध्यमिक शिक्षा विभाग)
मो०: 7906006187
लेखचन्द्र गुप्ता
राष्ट्रीय संयोजक (खेल)
मो०: 9235728318
अजय कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (राज्य कर्मचारी)
मो०: 7007822504
महिपाल
राष्ट्रीय संयोजक (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9935456466
जगदीश प्रसाद दिनकर
राष्ट्रीय संयोजक (हथकरधा विभाग)
मो०: 9455593651
विवेक कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सामाजिक संगठन)
मो०: 9616961612
श्रीमती सविता
राष्ट्रीय संयोजक (असंगठित क्षेत्र)
मो०: 8400430633
कु० ललिता
राष्ट्रीय संयोजक (महिला विभाग)
मो०: 7985811410
आशीष कुशवाहा
राष्ट्रीय संयोजक (अनुशिक्षण)
मो०: 8318038232
डा० अति दीपादन
राष्ट्रीय संयोजक (स्मारक एवं पार्क कर्मचारी)
मो०: 7269887945, 9258704062
विवेक कुमार चौधरी
राष्ट्रीय संयोजक (आयुध निर्माणियाँ अस्पताल)
मो०: 96969778910
महेश चन्द्र अहिरवार
राष्ट्रीय प्रवक्ता
मो०: 6388370835, 9956845323
विनोद कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (संविदा एवं व्यापार)
मो०: 9935783705

–: राज्य कार्यालय छत्तीसगढ़ :–

वार्ड नं० 35 दुर्गा नगर
नियर नगर पालिका निगम कार्यालय के पास
जिला रायपुर
श्रीमती रमा गजभिये
राष्ट्रीय संयोजक (छत्तीसगढ़/महाराष्ट्र)
मो०: 7828273934
आयुष गजभिये
राज्य प्रभारी
मो०: 9131112561
राजबहादुर अहिरवार (बस्तर)
राज्य सहप्रभारी
मो०: 620306631

–: राज्य कार्यालय राजस्थान :–

जी–19, नियर आटो स्टैण्ड
खुदानपुरी, जिला – अलवर
ताराचन्द
राज्य प्रभारी
मो०: 8504063363

–: पूर्वोत्तर राज्य कार्यालय असम :–

ग्राम – चिपरसंगम पार्ट–1
पो० – अलगापुर जिला – हैलाकांदी
बिलालुद्दीन चौधरी
प्रभारी पूर्वोत्तर राज्य
मो०: 9401027750
भवानी बूढ़ा ठोकी
प्रभारी असम राज्य
मो०: 6000539663
हरीनाथ चौहान
राष्ट्रीय संयोजन (असम & बिहार राज्य)
मो०: 6000380690
रितुदास
राष्ट्रीय संयोजक (असम & पं० बंगाल राज्य)
मो०: 8638349801

–: प्रभारी हरियाणा राज्य :–

देवेन्द्र सहरावत
मो०: 9068831086

–: प्रभारी बिहार राज्य :–

अनिलदास # 9651217573
रामप्यार साह # 6263491099

–: प्रभारी म० प्र० राज्य :–

महेन्द्र तुरकर
प्रदेश प्रभारी
मो०: 8878372412
पुष्पेन्द्र अहिरवार
प्रदेश प्रभारी
मो०: 9669376505
रमाशंकर
प्रदेश प्रभारी उ० प्र० (बेसिक शिक्षिक)
मो०: 9450850778
ईश्वरी प्रसाद
राज्य संयोजक उ० प्र० (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9794366838
रामसिंह
मण्डल संयोजक झांसी
मो०: 9616838281, 6392558232
अनिल कुमार
मण्डल प्रभारी कानपुर
मो०: 9198414002
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक वाराणासी
मो०: 9935363730, 9170836363
दातादीन
मण्डल संयोजक लखनऊ
मो०: 8115511006
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8948990184
सुभाष चन्द्र
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8303995957
सुभाष कुमार
मण्डल संयोजक कानपुर
मो०: 9695931879
राकेश कुमार
जिला प्रभारी इटावा
मो०: 8009802461

पदाधिकारी बनने के लिए सम्पर्क करें – 9454923394

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आनन्द मोहन

संयुक्त आयुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

के. पी. वर्मा

उपायुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निर्देशालय, कानपुर
मो० : 9415268129

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगमोहन बामनिया

उप निदेशक श्रम विभाग
कानपुर (उ0प्र0)

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोहित

अधिशासी अभियन्ता
मध्य गंगा नहर निर्माण खंड 10
सिचांई एवं जल संसाधन विभाग, बुलन्दशहर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रताप सिंह

प्रशासनिक अधिकारी
मुख्य अभियंता कार्यालय, लोक निर्माण विभाग, कानपुर
मो.: 9415430469

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय बौद्ध

सुपरिंटेंडेंट सी.जी.एस.टी.
सर्वोदय नगर, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश कुमार

प्रधान सहायक
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9005201853, 7007615951

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भूप सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9455646040

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर, उ0प्र0
मो० : 7905305856

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अर्चना कैथवार

प्रशासनिक अधिकारी (उपाध्यक्ष)
लेबर डिपार्टमेन्ट मिनिस्टीरियल एम्प्लाइज एसोसिएशन उ0प्र0
कल्चर मिनिस्टर उ.प्र. राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नीतू जैसवार

भाषा अनुदेशक हिन्दी
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान महिला
लाल बंगला, कानपुर, मो.: 9838291001

समस्त सम्मानित क्रमिको एवं नगरवासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मेवालाल

क्षेत्रीय अध्यक्ष
जोनल प्रेसीडेन्ट मिनिस्ट्रयल एसो. पी.डब्लू.डी.
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी
उपध्यक्ष रा0क0स0 परिषद, कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

वीरेन्द्र कुमार भारतीय

सहायक लेखाधिकारी
श्रमायुक्त कार्यालय, कानपुर उ0प्र0

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

प्रशासनिक अधिकारी
मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953
अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामचरन

पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो० : 9984251800

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो० : 9696222033

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

डिपो मनैजर/नाजीर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रतिमा रानी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9305218844

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राजकुमार

कनिष्ठ सहायक
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी.रोड, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द कुमार

कनिष्ठ लिपिक
मो.: 9621999187
नगर निगम कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

शाखा कार्यालय सहायक
यूनाइटेड इण्डिया इन्श्यूरेन्स क0 लि0
कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गीता कुमारी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी. रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर के आजाद

रि0 सहायक मण्डल प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय पी.एस. विभाग, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

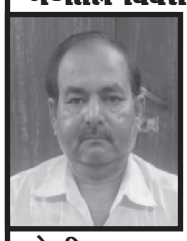

धर्मेन्द्र कुमार

क्षेत्रीय कार्यालय उ.प्र. सर्वोदय नगर, कानपुर
क्षेत्रीय अपर उ.प्र. श्रमायुक्त कार्यालय

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरविन्द कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.
शाखा गोविन्द नगर कानपुर
मो.: 9956976995

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुधीर कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.
शाखा सर्वोदय नगर, जी. टी. रोड, कानपुर
मो.: 9411663069

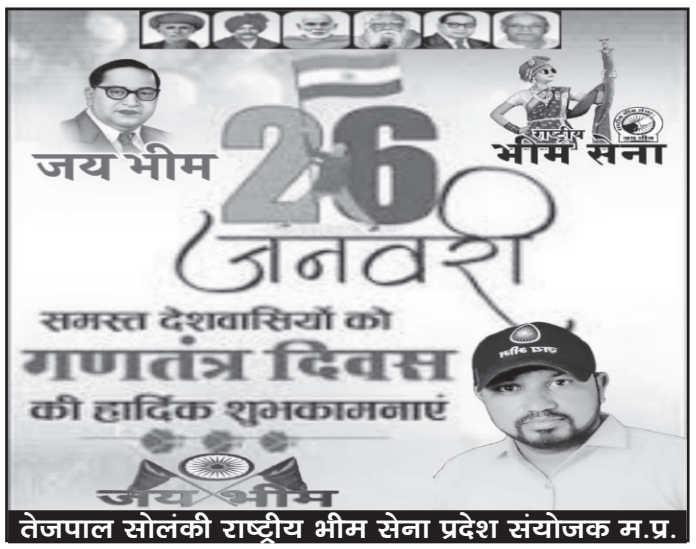

तेजपाल सोलंकी राष्ट्रीय भीम सेना प्रदेश संयोजक म.प्र.

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सी. के. गौतम

डिप्टी कमिश्नर स्टेट टैक्स
बहराइच

चेतना पदार्थ के बाद

आत्मा परमात्मा या चेतना जो भी कहे वह पदार्थ के बाद में आते हैं। यह पृथ्वी करोड़ों वर्ष तक बिना किसी पेड़–पौधे अथवा जीव–जन्तु के ऐसे ही रही। आज भी जितने ग्रह और उपग्रह मानव ने खोजे हैं उसमें शुक्र, मंगल, बृहस्पति चाँद, बृहस्पति के उपग्रह, शनि 70 तथा 90 अन्य सूर्यो के आदि जहाँ–जहाँ मानव निर्मित राकेट गये हैं, और जिनकी भूमि, वायुमण्डल आदि के सम्बन्ध में मानव को पर्याप्त ज्ञान है, वहाँ कहीं किसी भी प्रकार की कोई वनस्पति या कोई जीव–जन्तु नहीं है। जितने तारे हैं उनमें हमारा सूरज भी एक है वह सब तो आगे के गोले हैं। वहां किसी वनस्पति अथवा जीव–जन्तु होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। परिणामस्वरूप हम यह कह सकते हैं कि सृष्टि में 99 प्रतिशत से अधिक पदार्थ पिण्ड ऐसे हैं जहाँ कोई वनस्पति अथवा जीव–जन्तु नहीं है। पदार्थ बिना चेतना के रह सकता है। किन्तु चेतना बिना पदार्थ के नहीं रह सकती। इसलिए चेतना से पदार्थ पैदा नहीं हुआ वरन् पदार्थ से चेतना पैदा हुई। और सच तो यह है जो आगे चलकर सिद्ध किया जायेगा कि चेतना अलग से कोई चीज नहीं है वह तो पदार्थ का एक अपना ही रूप है।

साभार :
ईश्वर की खोज
पेज संख्या 18 से 19 तक
चौ० महाराज सिंह भारती पूर्व सांसद

द्रविड़ भारत मासिक पत्रिका परिवार के सभी लोगों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं .....

कार्य करने की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वहीं पर होती है, जहाँ शोषण का समूल नाश कर दिया जाता है, जहाँ एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार नहीं किया जाता, जहाँ बेरोजगारी नहीं है, जहाँ गरीबी नहीं है, जहाँ व्यक्ति को अपने धंधे के हाथ से निकल जाने का भय नहीं है, अपने कार्यों के परिणामस्वरूप जहाँ व्यक्ति अपने धंधे की हानि, घर की हानि तथा रोजी–रोटी की हानि के भय से मुक्त है।

डा. भीमराव अम्बेडकर

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

जल अमूल्य निधि है

जल ही जीवन है

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1–	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1–	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2–	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2–	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3–	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3–	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4–	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर फोन कर अवगत करायें।	4–	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5–	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर इसकी जानकारी दें।	5–	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6–	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6–	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल–संरक्षण

1– बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250–300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।

2– जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।

3– प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगातें हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।

4– ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके/बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।

5– सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

सचिव
पी. के. सिंह

महाप्रबन्धक
आनन्द त्रिपाठी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।